SAMPLE CONTENT

हिंदी (LL)

उपयोजित लेखन

बोर्ड की नई कृतिपत्रिका प्रारूप के अनुसार

लेखन क्षमता के संपूर्ण विकास हेतु उपयुक्त

कक्षा दसवीं

चंद्रभूषण शुक्ल
B.Ed, B.M.M.- Journalism

ज्योति नाविक
M.A., B.Ed.

Target Publications® Pvt. Ltd.

महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, पुणे - ०४ द्वारा
अद्ययावत पाठ्यपुस्तक पर आधारित

हिंदी (LL)

उपयोजित लेखन

कक्षा दसवीं

विशेषताएँ

- निर्धारित कृतिपत्रिका प्रारूप पर आधारित
- कक्षा दसवीं की पाठ्यपुस्तक में दी गई विभिन्न लेखन शैलियों का समावेश
- लेखन की विभिन्न शैलियों का आवश्यकतानुसार विस्तृत व सरल भाषा में विवेचन
- लेखन शैलियों की अधिकाधिक कृतियों का समावेश
- मार्च (२०१९, २०२०, २०२२ व २०२३), जुलाई (२०१९) तथा दिसंबर (२०२०) बोर्ड कृतिपत्रिकाओं के उपयोजित लेखन का समावेश
- विद्यार्थियों की सृजनात्मक व कल्पनात्मक शक्ति के विकास हेतु उपयुक्त
- उपयोजित लेखन की संपूर्ण तैयारी हेतु उपयुक्त
- विद्यार्थियों के मार्गदर्शन हेतु कृतिपत्रिका प्रारूप का समावेश

व्याकरण में पूर्णांक प्राप्त करने हेतु टार्गेट के **"हिंदी व्याकरण व शब्दसंपदा"** पुस्तक का अधिकाधिक अभ्यास करें। अधिक जानकारी हेतु दिए गए QR Code को स्कैन करें।

Sample Content

Printed at: **Print to Print,** Mumbai

© *Target Publications Pvt. Ltd.*
No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, C.D. ROM/Audio Video Cassettes or electronic, mechanical including photocopying; recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the Publisher.

Balbharati Registration No.: 2018MH0022 **TEID: 3138** P.O. No. 8303

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो!

शिक्षा के इस नए पड़ाव पर आप सभी का हार्दिक स्वागत है। शैक्षणिक वर्ष की इस नई शुरुआत के साथ ही आप सभी के मन में चिंता व चिंतन दोनों का बढ़ना स्वाभाविक है। खासकर जब बात उपयोजित लेखन की होती है, तो चिंता और भी बढ़ जाती है। उपयोजित लेखन विभाग कक्षा दसवीं की परीक्षा में सबसे अधिक अंकों वाला व सबसे महत्त्वपूर्ण विभाग है। विद्यार्थी इस विभाग में पूछी गई कृतियों को हल कर अधिक-से-अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थियों को इस विभाग हेतु तैयार करने के लिए कक्षा दसवीं की कृतिपत्रिका प्रारूप को आधार बनाकर **टार्गेट पब्लिकेशंस** ने **हिंदी (LL) उपयोजित लेखन: कक्षा दसवीं** पुस्तिका का निर्माण किया है। टार्गेट पब्लिकेशंस के उठाए गए इस कदम से विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होने के साथ-साथ उनका सर्वांगीण विकास निश्चित है।

विद्यार्थी उपयोजित लेखन की पूर्ण तैयारी सरलता से कर सकें, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तिका का निर्माण किया गया है। इस पुस्तिका में कक्षा दसवीं की कृतिपत्रिका के पाँचवें विभाग उपयोजित लेखन के सभी घटकों को समाहित किया गया है। इन घटकों में पत्र-लेखन, गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति), वृत्तांत-लेखन, कहानी-लेखन, विज्ञापन-लेखन व निबंध-लेखन की अधिकाधिक कृतियों का समावेश किया गया है। ये कृतियाँ न केवल विद्यार्थियों में लेखन क्षमता विकसित करेंगी, बल्कि उन्हें कल्पनाशीलता तथा सृजनशीलता की ओर उन्मुख भी करेंगी। इस पुस्तिका में कक्षा दसवीं की पाठ्यपुस्तक में दी गई उपयोजित लेखन की सभी कृतियों को शामिल किया गया है। इसके अलावा परीक्षा की पूर्ण तैयारी हेतु यहाँ पिछले वर्षों की बोर्ड कृतिपत्रिकाओं में पूछी गईं कृतियों को समाहित किया गया है। पुस्तिका में उपयोजित लेखन की दी गई वैविध्यपूर्ण कृतियाँ विद्यार्थियों को उपयोजित लेखन विभाग की पूर्ण तैयारी हेतु निश्चित ही सहायक सिद्ध होंगी। इसके साथ ही इस पुस्तिका के माध्यम से विद्यार्थियों का मनोबल भी बढ़ेगा।

शैक्षणिक वर्ष में उपयोजित लेखन की पूर्ण तैयारी हेतु निर्मित गागर में सागर यह पुस्तिका आप सभी के हाथों में सौंपते हुए हमें बहुत ही आनंद की अनुभूति हो रही है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तिका विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और उनका सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी।

पुस्तिका की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए आपके अमूल्य सुझाव आमंत्रित हैं। हमारा ई-मेल है: mail@targetpublications.org

उज्ज्वल भविष्य की ढेरों शुभकामनाएँ!

प्रकाशक

संस्करण: दूसरा

Sample Content

Disclaimer

This reference book is transformative work based on 'हिंदी लोकभारती; प्रथमावृत्ति: २०१८, चौथा पुनर्मुद्रण: २०२२' published by the Maharashtra State Bureau of Textbook Production and Curriculum Research, Pune. We the publishers are making this reference book which constitutes as fair use of textual contents which are transformed by adding and elaborating, with a view to simplify the same to enable the students to understand, memorize and reproduce the same in examinations.

This work is purely inspired upon the course work as prescribed by the Maharashtra State Bureau of Textbook Production and Curriculum Research, Pune. Every care has been taken in the publication of this reference book by the Authors while creating the contents. The Authors and the Publishers shall not be responsible for any loss or damages caused to any person on account of errors or omissions which might have crept in or disagreement of any third party on the point of view expressed in the reference book.

© reserved with the Publisher for all the contents created by our Authors.

No copyright is claimed in the textual contents which are presented as part of fair dealing with a view to provide best supplementary study material for the benefit of students.

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ
	कृतिपत्रिका का प्रारूप / कृतिपत्रिका प्रारूप का विस्तारित विवेचन	१
१.	**पत्र-लेखन**	३
	औपचारिक पत्र	५
	अनौपचारिक पत्र	२३
२.	**गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति)**	३६
३.	**वृत्तांत-लेखन**	४५
४.	**कहानी-लेखन**	५४
५.	**विज्ञापन-लेखन**	७१
६.	**निबंध-लेखन**	८०

आत्मकथनात्मक

	निबंध	पृष्ठ		निबंध	पृष्ठ
१.	पेड़ की आत्मकथा	८१	१३.	एक पुल की आत्मकथा	८९
२.	जूते की आत्मकथा	८१	१४.	एक कुएँ की आत्मकथा	८९
३.	छतरी की आत्मकथा	८२	१५.	बंजर जमीन की आत्मकथा	९०
४.	शिक्षक की आत्मकथा	८३	१६.	एक पंछी की आत्मकथा	९०
५.	एक मजदूर की आत्मकथा	८३	१७.	कलम की आत्मकथा	९१
६.	एक कुत्ते की आत्मकथा / पालतू प्राणी की आत्मकथा	८४	१८.	घड़ी की आत्मकथा	९१
७.	एक मूर्ति की आत्मकथा	८५	१९.	रुपये की आत्मकथा	९२
८.	एक फूल की आत्मकथा	८५	२०.	किले की आत्मकथा	९२
९.	एक उद्यान की आत्मकथा	८६	२१.	सैनिक की आत्मकथा	९३
१०.	एक समाजसेवक की आत्मकथा	८७	२२.	कोरोना पीड़ित की आत्मकथा	९३
११.	एक चिकित्सक की आत्मकथा	८७	२३.	मैं हिमालय बोल रहा हूँ...	९४
१२.	श्यामपट्ट की आत्मकथा	८८			

वैचारिक

२४.	आतंकवाद	९५	३९.	कन्याभ्रूण हत्या	१०४
२५.	पेड़ों का महत्त्व	९५	४०.	समय का महत्त्व	१०५
२६.	पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं	९६	४१.	सत्यमेव जयते	१०५
२७.	बढ़ती जनसंख्या का प्रकोप	९६	४२.	सामाजिक भेदभाव	१०६
२८.	नशे के दलदल में धँसते युवा	९७	४३.	महँगाई	१०७
२९.	बेरोजगारी	९८	४४.	अकाल	१०७
३०.	दूरदर्शन	९८	४५.	भ्रष्टाचार एक कलंक	१०८
३१.	खेलों का महत्त्व	९९	४६.	जल है तो कल है	१०८
३२.	प्रदूषण	९९	४७.	कंप्यूटर ज्ञान : आज की आवश्यकता	१०९
३३.	बाल मजदूरी	१००	४८.	अंधविश्वास : एक अभिशाप	१०९
३४.	निरक्षरता	१०१	४९.	स्त्री शिक्षा का महत्त्व	११०
३५.	स्वच्छता का महत्त्व	१०१	५०.	विज्ञान के चमत्कार	११०
३६.	बाढ़ : एक भीषण समस्या	१०२	५१.	समाचार-पत्र	१११
३७.	विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग	१०३	५२.	संदेश वहन के आधुनिक साधनों से लाभ-हानि	११२
३८.	दहेज	१०३			

Sample Content

	वर्णनात्मक					
५३.	दशहरा	११२		६४.	मुंबई लोकल	११८
५४.	मेरा प्यारा गाँव	११३		६५.	पर्वतीय स्थल की यात्रा	११९
५५.	वर्षा ऋतु	११३		६६.	दही हांडी	११९
५६.	कुंभ मेले में कुछ घंटे	११४		६७.	शिक्षक दिवस	१२०
५७.	रेलवे स्टेशन पर बिताए कुछ घंटे	११४		६८.	बाल दिवस	१२०
५८.	बस स्थानक पर दो घंटे	११५		६९.	ताजमहल	१२१
५९.	बाढ़ का दृश्य	११५		७०.	मेरी माँ	१२१
६०.	हमारा राष्ट्रीय त्योहार	११६		७१.	हिमालय	१२२
६१.	गणेशोत्सव	११६		७२.	प्रकाशपर्व दीपावली	१२२
६२.	गाँवों का देश भारत	११७		७३.	नदी किनारे दो घंटे	१२३
६३.	भारतीय किसान	११७		७४.	ऐतिहासिक स्थल की सैर	१२३
	चरित्रात्मक					
७५.	राष्ट्रपिता / मेरे प्रिय नेता	१२४		८१.	पर्वतारोही बछेंद्री पाल	१२८
७६.	डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम / मेरा प्रिय वैज्ञानिक	१२५		८२.	छत्रपति शिवाजी महाराज	१२८
७७.	सचिन तेंदुलकर / मेरा प्रिय खिलाड़ी	१२५		८३.	मेरे प्रिय कवि	१२९
७८.	नेताजी सुभाष चंद्र बोस / मेरे प्रिय स्वतंत्रता सेनानी	१२६		८४.	भगत सिंह	१२९
७९.	मेरे प्रिय शिक्षक	१२६		८५.	मेरा प्रिय गायक	१३०
८०.	मेरी प्रिय वीरांगना / झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	१२७				
	कल्पनाप्रधान					
८६.	यदि सूरज न होता तो...	१३१		९५.	यदि इंटरनेट न होता तो...	१३५
८७.	यदि समाचार-पत्र न होते...	१३१		९६.	यदि हिमालय न होता तो...	१३६
८८.	अगर मैं उड़ सकता...	१३२		९७.	यदि पुलिस न होती तो...	१३६
८९.	यदि पेड़ न होते...	१३२		९८.	अगर परीक्षाएँ न होतीं तो...	१३७
९०.	यदि रात न होती तो...	१३३		९९.	यदि सड़क बोलती तो...	१३७
९१.	यदि मैं प्रधानमंत्री होता...	१३३		१००.	यदि नल बोलने लगता तो...	१३८
९२.	यदि मैं जादूगर होता...	१३४		१०१.	अगर मैं पुलिस होता...	१३८
९३.	यदि चिकित्सक न होते तो...	१३४		१०२.	यदि बरसात न हो तो...	१३९
९४.	यदि यातायात के साधन न होते तो...	१३५		१०३.	यदि मैं पंछी होता...	१३९
	बोर्ड कृतियाँ					
१.	सड़क की आत्मकथा / मैं सड़क बोल रही हूँ...	१४०		९.	अनुशासन का महत्त्व	१४४
२.	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	१४१		१०.	काश! बचपन लौट आता.....	१४५
३.	प्रेमचंद / मेरे प्रिय लेखक	१४१		११.	नदी की आत्मकथा	१४५
४.	यदि मोबाइल न होता तो...	१४२		१२.	मेरा प्रिय त्योहार होली	१४६
५.	फटी पुस्तक की आत्मकथा / पुस्तक की आत्मकथा	१४२		१३.	यदि मैं अध्यापक होता	१४७
६.	पर्यावरण संतुलन	१४३		१४.	एक किसान की आत्मकथा	१४७
७.	मेरा भारत देश	१४३		१५.	पुस्तक प्रदर्शनी में एक घंटा	१४८
८.	मैं पृथ्वी बोल रही हूँ...	१४४		१६.	मेरा प्रिय खेल	१४८

Sample Content

कृतिपत्रिका का प्रारूप – विभाग ५ - रचना विभाग (उपयोजित लेखन)

प्र.५ सूचना के अनुसार लिखिए : **२६ अंक**

(अ) १. पत्र-लेखन (औपचारिक/अनौपचारिक) (दो में से एक) (विकल्प अंक: **५**) ५ अंक

२. गद्य-आकलन (अपठित गद्यांश पर आधारित ४ प्रश्न तैयार करना) ४ अंक

(आ) १. वृत्तांत-लेखन (७० से ८० शब्दों में) ५ अंक

अथवा

कहानी-लेखन (मुद्दों के आधार पर) (७० से ८० शब्दों में) (विकल्प अंक : **५**)

२. विज्ञापन-लेखन (५० से ६० शब्दों में) ५ अंक

(इ) निबंध-लेखन (तीन में से किसी एक विषय पर ८० से १०० शब्दों में) (विकल्प अंक : १४) ७ अंक

(पाँच प्रकारों में से तीन प्रकार के विषय देने हैं। विद्यार्थियों को उनमें से किसी एक विषय पर निबंध लिखना है।)

[महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, पुणे - ०४]

कृतिपत्रिका प्रारूप का विस्तारित विवेचन – विभाग ५ - रचना विभाग (उपयोजित लेखन)

प्र.५. (अ)

१. पत्र-लेखन: **(५)**

निम्नलिखित जानकारी का उपयोग कर पत्र लिखिए:

बोर्ड की कृतिपत्रिका में **प्र.५. (अ) १.** के अंतर्गत एक कृति **कुल ५ अंकों** के लिए पूछी जाएगी।

पत्र-लेखन:- यहाँ एक औपचारिक व एक अनौपचारिक पत्र दिया जाएगा, जिनमें से सिर्फ **एक पत्र लिखना** होगा और एक **विकल्प** होगा। **५ अंक**

२. गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति): **(४)**

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों:

बोर्ड की कृतिपत्रिका में **प्र.५. (अ) २.** के अंतर्गत एक कृति **कुल ४ अंकों** के लिए पूछी जाएगी।

गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति):- यहाँ १०० से १२० शब्दों का एक अपठित परिच्छेद दिया जाएगा। इसी के आधार पर **चार** ऐसे प्रश्न तैयार करने होंगे जिनके उत्तर परिच्छेद में एक-एक वाक्य में हों। **४ अंक**

प्र.५. (आ)

१. वृत्तांत-लेखन: **(५)**

नीचे दिए गए विषय पर वृत्तांत लिखिए:

बोर्ड की कृतिपत्रिका में **प्र.५. (आ) १.** के अंतर्गत एक कृति **कुल ५ अंकों** के लिए पूछी जाएगी।

वृत्तांत-लेखन:- यहाँ दी गई जानकारी व सूचना के आधार पर ७० से ८० शब्दों में वृत्तांत लिखना होगा। यहाँ कहानी के रूप में विकल्प होगा। **५ अंक**

अथवा

कहानी-लेखन: **(५)**

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग ७० से ८० शब्दों में कहानी लिखिए:

बोर्ड की कृतिपत्रिका में **प्र.५. (आ) १.** के अंतर्गत एक कृति **कुल ५ अंकों** के लिए पूछी जाएगी।

कहानी-लेखन:- कहानी-लेखन में मुद्दों पर आधारित एक कहानी पूछी जाएगी। यहाँ वृत्तांत के रूप में **विकल्प** दिया जाएगा। दी गई जानकारी के आधार पर ७० से ८० शब्दों में एक रोचक कहानी लिखनी होगी। **५ अंक**

Sample Content

२. **विज्ञापन-लेखन:** **(५)**

दी गए जानकारी के आधार पर एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए:

बोर्ड की कृतिपत्रिका में **प्र.५. (आ) २.** के अंतर्गत एक कृति **कुल ५ अंकों** के लिए पूछी जाएगी।

विज्ञापन-लेखन:- विज्ञापन के तीन प्रकार (वस्तु संबंधी/ व्यक्ति संबंधी/ स्थान संबंधी) बताए गए हैं। यहाँ दी गई जानकारी व सूचना के आधार पर ५० से ६० शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार करना होगा। **५ अंक**

प्र.५. (इ) निबंध-लेखन: **(७)**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए:

बोर्ड की कृतिपत्रिका में **प्र.५. (इ)** के अंतर्गत एक कृति **कुल ७ अंकों** के लिए पूछी जाएगी।

निबंध-लेखन:- निबंध के कुल पाँच प्रकार (आत्मकथनात्मक/वैचारिक/वर्णनात्मक/चरित्रात्मक/कल्पनाप्रधान) बताए गए हैं। इनमें से **तीन प्रकार** के निबंध के विषय यहाँ दिए जाएँगे, जिनमें से **एक प्रकार** पर निबंध लिखना होगा और दो **विकल्प** होंगे। निबंध कुल ८० से १०० शब्दों में लिखना होगा। **७ अंक**

Sample Content

२ गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति)

सूचना

कक्षा दसवीं के कृतिपत्रिका प्रारूप के अनुसार विभाग ५ – उपयोजित लेखन के प्रश्न ५ (अ) (२) के अंतर्गत चार अंकों के लिए यह कृति पूछी जाएगी। यहाँ दिए गए परिच्छेद में से ऐसे चार प्रश्न तैयार करने होंगे जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक-एक अंक होगा।

भाषाई कौशल का सर्वांगीण विकास करने हेतु पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों को प्रश्नों के निर्माण की कला सिखाई जाती है। प्रश्नों के निर्माण से विद्यार्थियों में आकलन क्षमता का तेजी से विकास होता है। इस प्रकार के लगातार अभ्यास से विद्यार्थी गद्य के मूल भाव को समझने में समर्थ बन जाते हैं।

अपठित परिच्छेद पर आकलन हेतु प्रश्न तैयार करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए:

१. प्रश्न तैयार करने से पहले परिच्छेद को ध्यानपूर्वक दो बार पढ़ें।
२. प्रश्न सरल, छोटे एवं स्पष्ट होने चाहिए।
३. तैयार किए गए प्रश्न सार्थक होने चाहिए।
४. वाक्यों में विरामचिह्नों का प्रयोग ध्यानपूर्वक करना चाहिए।
५. लिखे गए प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है।
६. प्रश्नों के उत्तर परिच्छेद में मौजूद होने चाहिए।
७. प्रश्नों के उत्तर नहीं लिखने हैं।

विद्यार्थी नीचे दिए गए प्रश्नवाचक शब्दों की सहायता से प्रश्नों का निर्माण आसानी से कर सकते हैं:

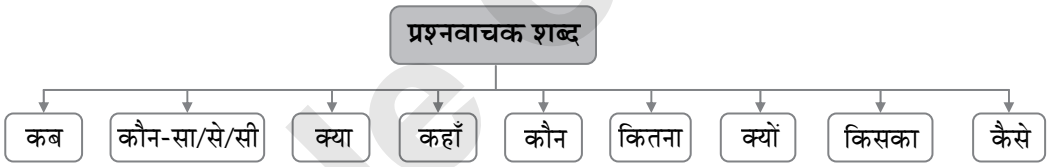

नमूना कृतियाँ

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हों:

१

हिंदुस्तान एकमात्र ऐसा देश है, जो विविधता में एकता की अद्‌भुत मिसाल कायम करता है। भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि सभी दृष्टिकोणों से हिंदुस्तान की धरती पर विविधता के दर्शन होते हैं। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि सभी धर्मों के लोग यहाँ एकसाथ प्रेम से रहते हैं। सभी के त्यौहार व रीति-रिवाज अलग-अलग हैं, लेकिन हर त्यौहार में एकता की झलक दिखाई देती है। दीपावली पर जहाँ सभी धर्म के लोग पटाखे जलाते हैं, वहीं ईद की सेवाइयाँ सभी मिल-बाँटकर खाते हैं। भाँगड़े की ताल पर हर हिंदुस्तानी का दिल थिरकता है और सांताक्लॉज बिना किसी भेदभाव के सभी को उनका मनचाहा उपहार दे जाते हैं। विश्व के किसी अन्य देश में इतनी विविधता नहीं है, जितनी हिंदुस्तान में दिखाई देती है। इसके बावजूद भी यहाँ हर हिंदुस्तानी सबसे पहले भारतीय है, उसके बाद किसी अन्य जाति अथवा धर्म का है। हिंदुस्तान की इस पवित्र मिट्‌टी में प्रेम और सहयोग की भावना भरी हुई है। विपत्ति पड़ने पर न कोई जाति देखता है, न कोई संप्रदाय बस लोगों की सेवा करना ही सबसे बड़ा धर्म बन जाता है।

प्रश्न

१. कौन-सा देश विविधता में एकता की मिसाल कायम करता है?
२. किसकी ताल पर हर हिंदुस्तानी का दिल थिरकता है?
३. कौन सभी को उनका मनचाहा उपहार दे जाता है?
४. हिंदुस्तान की मिट्‌टी में क्या भरी हुई है?

Sample Content

२

वर्षा ऋतु जीवन का दूसरा नाम है। आसमान में चमकती बिजली व गर्व से गड़गड़ाहट करते बादल वर्षा के आगमन का संदेश देते हैं। इसके आते ही सभी जीव-जंतुओं में जैसे नवजीवन का संचार हो जाता है। पेड़-पौधे हरे-भरे हो जाते हैं। नदी-तालाब पानी से लबालब होकर बहने लगते हैं। धरती हरी-हरी घासों की एक अद्‌भुत चादर ओढ़ लेती है। मनभावन मयूर मस्ती में मग्न होकर नृत्य करने लगते हैं। मेंढक पोखरों में टर्र-टर्र करते हुए वर्षा का स्वागत करते हैं। कोयल की कूक और पंछियों का कलरव सुनकर मन हर्षित हो जाता है। रिमझिम वर्षा के बीच हल्की ठंडी बयार तन और मन में उत्साह का संचार कर देती है। भूमिपुत्र का वर्षा के प्रति प्रेम अगाध है। वह तो आँखें बिछाए वर्षा रानी के आगमन की प्रतीक्षा करता रहता है। जैसे ही वर्षा की पहली बूँद उसकी धरती पर पड़ती है, उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता है। जो वर्षा इतनी मनमोहिनी है, वही जब विकराल रूप धारण कर लेती है, तो जीवन त्राहि-त्राहि करने लगता है। अतिवृष्टि के रूप में यही जीवनदायनी वर्षा रानी मृत्यु का तांडव करने लगती है। रौद्र रूप धारण कर यह वर्षा जान और माल की ऐसी क्षति करती है, जिसकी पूर्ति करने में दशकों लग जाते हैं।

प्रश्न

१. वर्षा दूसरा नाम क्या है?
२. कौन वर्षा के आगमन का संदेश देते हैं?
३. वर्षा के प्रति किसका प्रेम अगाध है?
४. कौन रौद्र रूप धारण कर मृत्यु का तांडव करने लगती है?

३

हिंदुस्तान को त्यौहारों का देश कहा जाता है। त्यौहार हमारे समाज की संस्कृति व सभ्यता की अभिव्यक्ति हैं। धार्मिक महत्त्व से ओतप्रोत त्यौहारों का उद्‌भव मानव समाज के कल्याण के लिए हुआ है। इससे इंसान के जीवन में सुख, शांति, समृद्‌धि, प्रेम, एकता, आत्मविश्वास आदि सकारात्मक गुणों का संचार होता है। समाज में शौर्य और वीरता को बनाए रखने के लिए शक्ति पर्व दशहरा का त्यौहार मनाया जाता है। जो धर्म और सत्य की स्थापना का प्रतीक है। समाज बिना धन और धान्य के सुख और संपन्न नहीं हो सकता है। अत: दीपावली के रूप में लक्ष्मी पूजन का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। होली में रंगों की बरसात में भीगकर सभी के अंतर्मन से ईर्ष्या व द्‌वेष के दुर्गुण धुल जाते हैं और स्नेहभाव का संचार होता है। त्यौहार न सिर्फ सामाजिक बल्कि वैज्ञानिक पक्ष भी रखते हैं। त्यौहारों के आते ही साफ-सफाई की जाती है, इससे घर व आस-पास का माहौल साफ-सुथरा हो जाता है व सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। होलिका दहन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। हर त्यौहार मनुष्य को प्रकृति के और करीब ले जाता है और जीवन की राह को आसान करता है। युगों-युगों से इन त्यौहारों की परंपरा चली आ रही है और मानवजाति के अंतिम क्षण तक यह परंपरा फलती-फूलती रहेगी।

प्रश्न

१. हिंदुस्तान को किसका देश कहा जाता है?
२. त्यौहारों से इंसान के जीवन में किन गुणों का संचार होता है?
३. कौन-सा त्यौहार सत्य व धर्म की स्थापना का प्रतीक है?
४. होली में किसकी बरसात होती है?

४

इंसान व सभी जीव-जंतुओं को जीवित रहने के लिए शुद्‌ध पर्यावरण की आवश्यकता है। शुद्‌ध हवा, पानी व भोजन के बिना धरती पर जीवन संभव नहीं है। पर्यावरण की अशुद्‌धता का अर्थ है, जीवन को धोखे में डालना। आज इंसान जान-बूझकर सिर्फ वर्तमान फायदे को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करने लगा है। इससे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। वाहनों व कारखानों के निकलते जहरीले धुएँ से हवा दूषित हो गई है। नदियों व तालाबों में छोड़ा जाने वाला केमिकल विशुद्‌ध जल को दूषित करने लगा है। इसके अलावा न जाने कितने ही जलीय जीवों पर संकट के बादल मँडरा रहे हैं। पेड़ों व जंगलों की धड़ल्ले से हो रही कटाई ने ऋतुचक्र को बिगाड़ दिया है। न समय पर वर्षा हो रही है और न ही ठंड पड़ रही है। चिलचिलाती धूप जीवन को चुभने लगी है। बाढ़, अकाल, भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाएँ भले ही हैं, लेकिन उनका कारण कहीं-न-कहीं इंसान की स्वार्थपूर्ण नीतियाँ ही हैं। इंसान लगातार अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए पर्यावरण के महत्त्व को अनदेखा करता जा रहा है। मानवजाति को समय रहते ही चेतना होगा, अन्यथा इसका खामियाजा आने वाले भविष्य में अवश्य भुगतना पड़ेगा।

प्रश्न

१. किसे जीवित रहने के लिए शुद्‌ध पर्यावरण की आवश्यकता होती है?
२. किसके बिना धरती पर जीवन संभव नहीं है?
३. ऋतुचक्र के बिगड़ने का क्या कारण है?
४. कौन-सी आपदाएँ प्राकृतिक आपदाएँ हैं?

Sample Content

५ प्राचीन समय में विद्यार्थी ऋषि-मुनियों के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करने जाते थे। एक बालक के रूप में विद्यार्थी गुरुकुल में प्रवेश करता था। वहीं रहकर शिक्षा ग्रहण करना और गुरुकुल के सभी नियमों का पालन प्रत्येक विद्यार्थी का धर्म होता था। विद्यार्थी को अपने कार्य स्वयं करने पड़ते थे। इसके अलावा आश्रम के विकास के लिए जो भी कार्य होते, उसकी जिम्मेदारी गुरु अपने शिष्यों पर ही डाल देते थे। एक युवक के रूप में शिक्षा पूर्ण कर बालक अपने परिवार में वापस लौटता था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बहुत अलग हो चुकी है। आज विद्यार्थी अपने घर पर ही रहते हैं और समय-समय पर विद्यालय जाकर अध्ययन करते हैं। इसके अलावा कुछ विद्यार्थी छात्रावास में रहकर भी शिक्षा ग्रहण करते हैं। आज शिक्षा पद्धति नित नए मानक तय कर रही है। इसके बावजूद भी यदि विद्यार्थी जीवन पर नजर डाली जाए, तो प्राचीन काल के विद्यार्थियों में जो नियम, संयम, दृढ़ता, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता जैसे गुण थे, वे कम होते जा रहे हैं। विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान तो दिया जा रहा है, लेकिन विद्यार्थी जीवन को तराशकर जीवन जीने की जो कला सिखानी आवश्यक होती है, उसमें कहीं-न-कहीं कमी दिखाई देती है।

प्रश्न

१. प्राचीन समय में विद्यार्थी कहाँ शिक्षा ग्रहण करते थे?
२. किस रूप में विद्यार्थी आश्रम में प्रवेश करता था?
३. प्राचीन समय में आश्रम के विकास की जिम्मेदारी कौन विद्यार्थियों पर डाल देता था?
४. आज के विद्यार्थियों में कौन-से गुण कम होते जा रहे हैं?

६ मनुष्य के जीवन में अनुशासन का बहुत अधिक महत्त्व होता है। अनुशासन के बिना मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य से बड़ी ही आसानी से भटक जाता है। अनुशासन के बिना इंसान जंगल में रहने वाले पशु की भाँति है। अनुशासनहीन व्यक्ति न जीवन में स्वयं के लिए हितकारी होता है और न ही दूसरों के लिए। वह स्वयं के लिए तो नित नई परेशानियाँ खड़ी करता ही रहता है साथ ही अपने आस-पास के लोगों को भी मुसीबत में डाल देता है। एक विशालकाय हाथी पर भी अनुशासन का अंकुश लग जाता है, तो उसका व्यवहार बदल जाता है। इसीलिए इंसान को भी जीवन में अनुशासन का पालन करना चाहिए। अनुशासित जीवन सफलता की पहली सीढ़ी है। जो व्यक्ति अनुशासन का पालन करता है, उसे जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। यदि किसी वजह से वह प्रतिकूल परिस्थितियों में घिर भी जाता है, तो बिना अधिक परेशानी के वह उससे निजात भी पा जाता है। अनुशासन सभी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन जब बात छोटे-छोटे विद्यार्थियों की होती है, तो इसका महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। बचपन में विद्यार्थी के रूप में जिस अनुशासन का पाठ बच्चे पढ़ते हैं, वे जीवनभर उसी राह पर चलते हैं।

प्रश्न

१. मनुष्य के जीवन में किसका बहुत अधिक महत्त्व है?
२. अनुशासन के बिना इंसान किसकी भाँति है?
३. कैसा व्यक्ति स्वयं व दूसरों के लिए हितकारी नहीं होता है?
४. अनुशासित जीवन किसकी पहली सीढ़ी है?

७ शिक्षा के महत्त्व को शब्दों में प्रस्तुत कर पाना असंभव है। शिक्षा अर्थात ज्ञान के बिना इंसान का अस्तित्व शून्य है। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है, परंतु इस रचना को सही मायने में शिक्षा के सहारे ही श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। कहा जाता है, विद्या विहीनः पशुः अर्थात शिक्षा शून्य व्यक्ति किसी वन्य पशु की भाँति विचरण करने वाला मात्र जीव बनकर रह जाता है। शिक्षा मनुष्य के विवेक का मूल है। शिक्षा मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाती है। इंसान में संस्कार और सद्गुणों का बीजारोपण शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। शिक्षा मात्र इंसान के लिए ही नहीं, अपितु पूरे समाज और पूरे देश के लिए एक ऐसी शक्ति है, जिसके सहारे विकास के नए-नए आयाम गढ़े जा सकते हैं। शिक्षा रूपी संपदा एकमात्र ऐसी संपत्ति है, जो संसार की सभी प्रकार की संपत्तियों से सर्वथा भिन्न है। इसकी विशेषता अद्वितीय है। न ही कोई चोर इसे कोई चुरा सकता है, न ही बाँटने से यह घटता है। इसे जितना बाँटा जाए यह उतना भी बढ़ता जाता है और जब इसे खर्च नहीं किया जाता तो यह स्वयं ही घटने लगता है।

प्रश्न

१. किसके महत्त्व को शब्दों में प्रस्तुत कर पाना असंभव है?
२. मनुष्य किसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है?
३. शिक्षा मनुष्य को किसकी कला सिखाती है?
४. शिक्षा के माध्यम से इंसान में किसका बीजारोपण संभव है?

Sample Content

८ किसी भी देश की शक्ति को उसके युवाओं से आँका जाता है। आज की युवा पीढ़ी की योग्यता को ध्यान में रखकर ही कल के सुनहरे भविष्य का सपना सँजोया जाता है। युवाशक्ति ही प्रत्येक राष्ट्र की कर्णधार होती है। यदि किसी देश की युवापीढ़ी में नेतृत्व करने की क्षमता है, तो उसे सफलता की बुलंदियों तक पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता है। अत: वर्तमान युवा पीढ़ी में क्षमता, प्रतिभा, दृढ़ता, त्याग आदि गुणों का होना अनिवार्य है। जिस देश की युवा पीढ़ी ऊर्जावान, कर्तव्यनिष्ठ और सन्मार्गी है, वही देश आगे चलकर संसार का नेतृत्व करता है। इसी कारण देश की सबसे अमूल्य संपदा के रूप में युवा पीढ़ी को देखा जाता है। यदि युवा पीढ़ी अपनी राह से भटक जाती है, तो ऐसे देश का बेड़ा गर्क होना निश्चित है। आज विश्व का प्रत्येक देश अपने युवाओं से उम्मीद लगाए बैठा है। चूँकि हिंदुस्तान युवाओं का देश है, इसलिए सबसे अधिक उम्मीद हिंदुस्तान को अपने युवाओं से है। यदि यह पीढ़ी पथभ्रष्ट हुए बिना अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है, तो आने वाले समय में हिंदुस्तान को एकबार फिर विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता है।

प्रश्न

१. किसी भी देश की शक्ति को किससे आँका जाता है?
२. वर्तमान युवा पीढ़ी में कौन-से गुण होने अनिवार्य हैं?
३. कैसी युवा पीढ़ी वाला देश संसार का नेतृत्व करता है?
४. देश की अमूल्य संपदा के रूप में किसे देखा जाता है?

९ आज हमारा समाज अपराध के दलदल में धँसता चला जा रहा है, लेकिन काफी हद तक इसका मुख्य कारण बेरोजगारी है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद जिन हाथों में बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ होती हैं, वही हाथ बेरोजगारी की भट्ठी में झुलसने के बाद हथियार उठा लेते हैं। यदि देश के अपराध ग्राफ पर निगाह डालें तो पता चलता है कि पिछले कुछ दशकों में आपराधिक मामलों में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि अब अपराध के साम्राज्य में पढ़े-लिखे लोग भी कदम रखने लगे हैं। अपराध के क्षेत्र में शिक्षितों की बढ़ती संख्या देश की रोजगार व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। लूटपाट से लेकर अपहरण और हत्या जैसे संगीन अपराधों में शिक्षित लोग शामिल होने लगे हैं। इससे समाज में दहशत और असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है। आज देश में नौकरी पाने के लिए हर पद के लिए कीमत तय हो गई है। निजी संस्थाओं से लेकर सरकारी संस्थाओं में नीचे से ऊपर तक के लोगों को शृंखलाबद्ध तरीके से खुश करना पड़ता है। जो डिग्रीधारक ऐसा करने में सफल हुआ, उसकी नौकरी पक्की और जो असफल होता है, वह फिर दर-दर की खाक छानता फिरता रहता है।

प्रश्न

१. आज हमारा समाज किस दलदल में धँसता चला जा रहा है?
२. पढ़े-लिखे लोग किस साम्राज्य में कदम रखने लगे हैं?
३. अपराध के क्षेत्र में शिक्षितों की बढ़ती संख्या किस पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती है?
४. किस तरह के संगीन अपराधों में शिक्षित शामिल होने लगे हैं?

१० वर्तमान समय में मोबाइल छोटे-बड़े हर व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता बन गई है। मोबाइल विज्ञान का ऐसा चमत्कार है, जिसकी जितनी बड़ाई की जाए उतनी कम है। एक छोटी-सी वस्तु में तस्वीरें खींचना, चलचित्र देखना, रेडियो सुनना, एक-दूसरे से संपर्क करना, तरह-तरह के खेल खेलना, समाचार देखना, ज्ञान-विज्ञान की बातें, सोशल मीडिया पर दोस्तों से मुलाकातें आदि सारी सुविधाएँ समाई हुई हैं। इसके रूप और क्षमताओं में नित्य उन्नति हो रही है। मोबाइल वर्तमान युग में भानुमति के पिटारे से कम नहीं है। ऐसे में लोगों का मोबाइल के प्रति रुझान बढ़ना तो स्वाभाविक है, लेकिन युवाओं में मोबाइल की दीवनगी देखते ही बनती है। युवापीढ़ी ने मोबाइल को अपने सिर-आँखों पर बिठा रखा है। विज्ञान की इस अनुपम भेंट की विशेषताओं को गिन पाना संभव नहीं है, लेकिन इंसान को एक बात नहीं भूलनी चाहिए कि किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती है। इसके अत्यधिक प्रयोग से मनुष्य के मानसिक व शारीरिक विकास पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव से आज कोई अनभिज्ञ नहीं है। इससे निकलने वाली तरंगें जीव-जंतुओं के लिए भी घातक सिद्ध हो चुकी हैं। अत: बहुत सोच-समझकर ही इस दिशा में हमें आगे बढ़ना होगा।

प्रश्न

१. वर्तमान युग में मोबाइल किससे कम नहीं है?
२. किसके रूप और क्षमताओं में नित्य उन्नति हो रही है?
३. किसने मोबाइल को अपने सिर-आँखों पर बिठा रखा है?
४. मोबाइल से निकलने वाली तरंगें किसके लिए घातक सिद्ध हो चुकी हैं?

Sample Content

११ नारी इस संपूर्ण जगत का आधार है। नारी के बिना संसार की कल्पना भी असंभव है। नारी कभी माता के रूप में नवजीवन देती है, तो कभी अर्धांगिनी के रूप में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। बहन के रूप में कभी वह अपना असीम प्रेम लुटाती है, तो कभी बेटी के रूप में गौरव प्रदान करती है। नारी के रूप अनेक हैं, लेकिन उसके हर रूप में प्रेम व समर्पण झलकता है। स्वयं के दुख और सुख की चिंता छोड़कर पिता, पति, पुत्र व भाई पर अपना सर्वस्व निछावर करने वाली सिर्फ नारी ही हो सकती है। तपस्या व त्याग का दूसरा नाम ही नारी है। शायद यही कारण है कि प्रकृति को भी स्त्री के रूप में पूजा जाता है, क्योंकि वह भी अपने पुत्रों पर अपना स्नेह लुटाती रहती है। नारी जब स्नेह लुटाने पर आती है, तो जगतमाता बन जाती है, लेकिन जब वह अत्याचार के विरुद्ध शस्त्र उठाती है, तो चंडी का रूप धारण कर लेती है। ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना इंसान है, लेकिन संपूर्ण रचना नारी ही है। नारी की महानता का बखान हमारे धर्मशास्त्र करते नहीं थकते हैं। अनुसूया, सावित्री जैसी अनेकों महान नारियों का उल्लेख हमारे ग्रंथों मे मिलता है, जिनके सामने स्वयं विधाता को भी अपना मस्तक झुकाना पड़ा है।

प्रश्न

१. किसके बिना संसार की कल्पना भी असंभव है?
२. नारी के हर रूप में क्या झलकता है?
३. किसका दूसरा नाम नारी है?
४. प्रकृति को किसके रूप में पूजा जाता है?

१२ संगति का व्यक्ति के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अच्छी संगति में रहने वाला व्यक्ति साधु बन जाता है और बुरी संगति पाकर साधु भी डाकू बन जाता है। तुलसीदास जी कहते हैं कि सुसंगति स्वर्ग की तरह होती है। जिसे पाने से इंसान का जीवन सुधर जाता है। सुसंगति से जीवन की राह आसान हो जाती है। वहीं कुसंगति एक ऐसा शाप है जिसे पाकर इंसान के जीवन का सर्वनाश हो जाता है। जिस तरह आम की पेटी में जिसमें कई अच्छे आम हैं, उसमें एक सड़ा आम रख दिया जाए, तो सारे आम सड़ने लगते हैं, उसी तरह कुसंगति में आने से सारी अच्छाइयों का नाश होने लगता है। हमारे धर्मग्रंथों में इसका सर्वोत्तम उदाहरण महर्षि वाल्मीकि जी का मिलता है। जन्म से ब्राह्मण होने के बावजूद भी उन्होंने रत्नाकर बनकर लोगों की हत्या और लूटपाट जैसा जघन्य अपराध किया। इसका कारण यह था कि बचपन में ही उन्हें एक भीलनी चुरा ले गई थी और उन्हीं भीलों के बीच उनका लालन-पालन हुआ। संगति ने अपना रंग दिखाया और रत्नाकर एक खूँखार डाकू-लुटेरा बन गया। उसके बाद जब महर्षि नारद की संगति मिली तो वही रत्नाकर महर्षि वाल्मीकि के रूप में विख्यात हुए। उन्होंने संस्कृत में श्रीराम व माता सीता के चरित्र का वर्णन किया और विश्व के प्रथम कवि बनें।

प्रश्न

१. व्यक्ति के जीवन पर किसका बहुत प्रभाव पड़ता है?
२. बुरी संगति में रहने से साधु क्या बन जाता है?
३. महर्षि वाल्मीकि को कौन चुरा ले गया था?
४. विश्व के प्रथम कवि कौन हैं?

१३ इंसान के जीवन की सफलता उसकी कर्मठता में है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी दृढ़ता से करता है, उसका जीवन आदर्श जीवन माना जाता है। नदी के निर्मल जल का कर्म होता है, कलकल करते हुए बहना और लोगों की प्यास बुझाना। यदि वही पानी किसी एक स्थान पर रुक जाता है, तो वह सड़ने लगता है। इससे स्पष्ट होता है कि जो अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता है, उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसके पास विवेक है। अत: अपने कर्तव्यों को समझकर उसका पालन करना उसका कर्म है और यही मानवजाति का धर्म भी है। यह संसार कर्मप्रधान है। कर्म करनेवाले को समाज अपने सिर आँखों पर बिठाता है और कर्तव्यों से जी चुरानेवाला सदैव हेय दृष्टि से देखा जाता है। कर्मवीर जीवन में किसी भी परिस्थिति का सामना हँसते-हँसते कर लेते हैं और सफलता उनके कदम चूमती है। कर्मठ व्यक्ति आने वाले भविष्य से घबराता नहीं है, बल्कि वर्तमान में अपने कर्मों पर ध्यान देता है। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने कुंती पुत्र अर्जुन को यही उपदेश दिया है कि इंसान को फल की इच्छा किए बिना आजीवन कर्म करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति फल की लालसा को त्यागकर विरक्त भाव से कर्म करता है, वह संसार में रहते हुए भी संन्यासी की भाँति होता है।

प्रश्न

१. इंसान के जीवन की सफलता किसमें है?
२. नदी के निर्मल जल का क्या कर्तव्य होता है?
३. कर्तव्यों से जी चुरानेवालों के साथ समाज कैसा व्यवहार करता है?
४. सफलता किसके कदम चूमती है?

Sample Content

१४

हिंदुस्तान एक प्रजातांत्रिक देश है। प्रजातंत्र के चार स्तंभ होते हैं, जिनकी सहायता से किसी भी प्रजातांत्रिक देश की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती है। इनमें कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका और मीडिया का समावेश है। देश की आम जनता के हितचिंतक के रूप में मीडिया को चौथे स्तंभ का दर्जा प्राप्त है। चारों स्तंभों में मीडिया को आम जनता के सबसे करीब माना जाता है। मीडिया का अर्थ है समाचार के माध्यम, जिनमें अखबार, समाचार चैनल, समाचार पत्रिकाएँ इत्यादि शामिल हैं। मीडिया अपने विभिन्न रूपों में आम जनता की आवाज को सरकार के काँनों तक पहुँचाती है। मीडिया एक जागरूक व विश्वसनीय प्रहरी की भाँति भ्रष्टाचार, अन्याय, अपराध आदि के खिलाफ आवाज बुलंद करती रहती है। यूँ कहा जा सकता है कि प्रजातंत्र के किसी भी स्तंभ से यदि कोई चूक होती है, तो उसके कान ऐंठने का कार्य मीडिया करती है। मीडिया की जिम्मेदारी व जवाबदारी आम जनता के प्रति है, लेकिन पिछले कुछ समय से मीडिया के बदलते रूप के कारण उसकी विश्वसनीयता और कर्मठता पर सवाल उठने लगे हैं। दुख की बात यह है कि जिस प्रहरी के सहारे जनता चैन से बैठी थी, अब वही राह भटक जाए, तो मासूम जनता का पथप्रदर्शन कौन करेगा?

प्रश्न

१. हिंदुस्तान कैसा देश है?
२. प्रजातंत्र में कितने स्तंभ होते हैं?
३. प्रजातंत्र के चार स्तंभ कौन-कौन से हैं?
४. मीडिया किसकी आवाज को सरकार के कानों तक पहुँचाती है?

१५

विनम्रता इंसान का सर्वश्रेष्ठ आभूषण है। जो नम्रता से झुकते हैं, भविष्य में वही सफलता की बुलंदियों को छूते हैं। विनम्र व्यक्ति का समाज में एक विशेष स्थान होता है। ऐसे व्यक्ति की सर्वत्र प्रशंसा होती है। जो कार्य कठोर वचनों से नहीं होते हैं, ऐसे मुश्किल कार्य भी नम्रता के दो मीठे बोल से हो जाते हैं। यूँ कहना भी अतिशयोक्ति न होगा कि विनम्रता व सुख एक-दूसरे के पूरक हैं। बड़े-बड़े विशालकाय अहंकारी वृक्ष जहाँ सीना तानकर तूफान का सामना करते हैं, वहीं विनम्र स्वभाववाली लताएँ झुककर तूफान का स्वागत करती हैं। नतीजा यह होता है कि जड़ें मजबूत होने के बावजूद भी वृक्ष अपने अस्तित्व की लड़ाई में हार जाते हैं और लताओं को नवजीवन प्राप्त होता है। विनम्रता का अर्थ कायरता नहीं होता है। विनम्रता इंसान को शांति, शक्ति और विवेक प्रदान करती है, जिसके सहारे इंसान प्रतिकूल परिस्थितियों का भी सामना कर सकता है। विनम्रता वह ब्रह्मास्त्र है जिसके सामने आते ही बड़ी-बड़ी मुसीबतें अपना दम तोड़ देती हैं। स्वयं परमात्मा को भी वही जीव अत्यंत प्रिय होते हैं, जो विनम्रता के आभूषण को धारण करते हैं। अत: जीवन में विनम्रता का होना बहुत ही आवश्यक है।

प्रश्न

१. इंसान का सर्वश्रेष्ठ आभूषण क्या है?
२. समाज में किसका विशेष स्थान होता है?
३. विनम्रता इंसान को क्या प्रदान करती है?
४. परमात्मा को कौन-से जीव अत्यंत प्रिय हैं?

१६

संघर्षों की भट्ठी में तपने वाला व्यक्ति ही इतिहास रचता है। जो व्यक्ति संघर्ष करता है, वही अपने सामर्थ्य का सही आकलन कर पाता है। संघर्ष की राह इंसान को निडर, शक्तिशाली और दृढ़ निश्चयी बनाती है। इतिहास गवाह है कि जिसने बिना घबराए चुनौतियों से दो-दो हाथ किए हैं, उसी का नाम अमर हुआ है। छोटी-सी उम्र में हाथों में शमशीर थामे हुए बालक जलालुद्दीन अकबर को देखकर कौन सोच सकता था कि एक दिन वह इतिहास रच देगा। संघर्ष में वह शक्ति है, जो इंसान को बुलंदियों पर काबिज कर सकता है। संघर्ष का जीवन सबसे बड़ा जीवन है। ऐसा जीवन ही सही मायने में सफल और आदर्श जीवन कहलाता है। संघर्ष का सामना करने वाले चरित्र इतिहास में बहुत कम ही देखने को मिलते हैं, लेकिन वे आनेवाली पीढ़ियों को संघर्ष का महत्त्व समझा जाते हैं। जिन लोगों को जीवन से कोई उम्मीद नहीं है और वे बस किसी तरह जीवन गुजार देना चाहते हैं, ऐसे लोगों के लिए संघर्ष की राह में कोई स्थान नहीं है। इसके विपरीत कुछ गिने-चुने लोग ही जीवन में एक विशेष मुकाम पर पहुँचने की अभिलाषा रखते हैं। संघर्ष की राहें ऐसे ही लोगों का स्वागत करती हैं।

प्रश्न

१. कैसा व्यक्ति इतिहास रचता है?
२. कौन अपने सामर्थ्य का सही आकलन कर पाता है?
३. कैसा जीवन सबसे बड़ा जीवन है?
४. संघर्ष में कैसी शक्ति है?

Sample Content

१७ वर्तमान युग विज्ञान का युग है। आज हमारे आस-पास जो भी वस्तुएँ दिखाई देती हैं, वे सबकुछ विज्ञान की कोख से ही जन्मी हैं। एक छोटे-से खिलौने से लेकर बड़ी-बड़ी मिसाइलें सबकुछ विज्ञान का ही चमत्कार है। विज्ञान के आविष्कारों के कारण ही आज मानव का जीवन सुख-सुविधा से संपन्न हुआ है। घूमने के लिए आलीशान कार व जहाज है; लोगों से संपर्क करने के लिए मोबाइल व सोशल मीडिया है; घातक बीमारियों का इलाज करने के लिए विकसित तकनीक है; मनोरंजन के लिए तरह-तरह के साधन हैं, अलादीन के चिराग में रहने वाले जिन्न की तरह ही विज्ञान ने मानव को हर वह चीज लाकर दे दी है, जिसकी उसे जरूरत है। विज्ञान ने पूरे संसार को एक छत के नीचे लाकर खड़ा कर दिया है। आज पूरा संसार एक परिवार के रूप में अपना जीवन व्यतीत कर सकता है, लेकिन ऐसा हो नहीं रहा है। जो विज्ञान जीवन देता है, उसी विज्ञान का सहारा लेकर आज युद्ध और संहार की रणनीतियाँ तैयार की जा रही हैं। घातक अस्त्रों व शस्त्रों का निर्माण किया जा रहा है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर अपने घातक हथियारों की धौंस जमा रहा है। विज्ञान जन्म दे सकता है, तो वह मौत का कारण भी बन सकता है, लेकिन यह सबकुछ विज्ञान से अधिक इंसान पर निर्भर करता है।

प्रश्न

१. वर्तमान युग किसका युग है?
२. किसके कारण आज मानव का जीवन सुख-सुविधा से संपन्न हुआ है?
३. विज्ञान ने किसे एक छत के नीचे लाकर खड़ा कर दिया है?
४. एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर किसकी धौंस जमा रहे हैं?

१८ गंगा नदी को हमारे देश में माता का दर्जा प्राप्त है। भारतीय संस्कृति में गंगा को पतित पावनी कहा गया है। गंगा को धरती पर लाने का श्रेय इक्ष्वाकु वंश के राजा भगीरथ को जाता है। उन्होंने अपने शापित पूर्वजों को मोक्ष दिलाने के लिए कठोर तप किया और अंतत: भगवान शिव की सहायता से माता गंगा को धरती पर आने के लिए मनाया। इस तरह धरती पर गंगा मैया का आना संभव हुआ। इतिहास में अकबर बादशाह के बारे में यह उल्लेख मिलता है कि वह गंगाजल के गुणों से बहुत प्रभावित था। अत: उसने अपने सेवकों को यह आदेश दे रखा था कि उसे पीने के लिए साधारण जल नहीं, बल्कि गंगाजल ही दिया जाए। हिंदू धर्म में गंगाजल को बहुत पवित्र माना जाता है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान गंगाजल के बिना संपन्न नहीं हो सकता है। यह गंगा मैया की महिमा ही है कि गंगाजल को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जबकि साधारण जल से कुछ समय बाद ही दुर्गंध आने लगती है। दुख की बात यह है कि जिस नदी को हम माता के रूप में पूजते हैं, उसे ही गंदा करने से जरा भी नहीं हिचकते हैं। आज गंगाजल दिन-प्रतिदिन दूषित होता जा रहा है। यह सर्वविदित है कि नमामि गंगे परियोजना के तहत गंगाजल के शुद्धीकरण की कोशिश की जा रही है, लेकिन यह कोशिश कितनी प्रभावकारी है यह कहना असंभव होगा।

प्रश्न

१. किस नदी को माता का दर्जा प्राप्त है?
२. गंगा मैया को धरती पर लाने का श्रेय किसे जाता है?
३. हिंदू धर्म में किसके बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान पूरा नहीं होता है?
४. किस परियोजना के तहत गंगा नदी की सफाई की जा रही है?

१९ भारतीय संस्कृति और विज्ञान दोनों ही एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जिसे आज तक हम अपनी सभ्यता और संस्कृति समझकर निभाते चले आ रहे थे, यदि उसे ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहेगा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पेड़-पौधों का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है, लेकिन हमारे भारतीय संस्कृति में इन्हें ईश्वर का दर्जा प्राप्त है। शास्त्रों की माने तो पेड़-पौधों में परमेश्वर का वास होता है। यही कारण है कि हिंदू धर्म में वृक्षों की पूजा-अर्चना की जाती है। धार्मिक नजरिए से देखें तो पीपल के पेड़ को लगाना और उसका पालन-पोषण करना बहुत ही पुण्य का कार्य माना गया है, क्योंकि इसमें सभी देवी-देवताओं का वास होता है। यदि इसी पेड़ को विज्ञान के चश्मे से देखें तो पता चलता है कि यह औषधीय गुणों का भंडार है। आयुर्वेद के अनुसार इसकी छाल, पत्ते, बीज, दूध, जटा व कोंपल आदि सबकुछ पाचन, खाँसी, बुखार, दस्त जैसी कई बीमारियों के इलाज हेतु उपयोगी हैं। हमारे घरों में अक्सर तुलसी के पौधे को आँगन में लगाया जाता है। वेदों व पुराणों में इन्हें माता का दर्जा प्राप्त है। विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि तुलसी औषधीय गुणों की खान है। इसी तरह बरगद, नीम, आम, अर्जुन ऐसे कई पेड़-पौधे हैं, जिनके वैज्ञानिक और धार्मिक महत्त्व को झुठलाया नहीं जा सकता है।

Sample Content

प्रश्न

१. भारतीय संस्कृति में किसे ईश्वर का दर्जा प्राप्त है?
२. शास्त्रों की माने तो पेड़-पौधों में किसका वास होता है?
३. किस धर्म में वृक्षों की पूजा-अर्चना की जाती है?
४. वेदों व पुराणों में किसे माता का दर्जा प्राप्त है?

२०

विख्यात गणितज्ञ सी. वी. रमण ने छात्रावस्था में ही विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश में ही नहीं विदेशों में भी जमा लिया था।

रमन का एक साथी छात्र ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कर रहा था। उसे कुछ कठिनाइयाँ प्रतीत हुईं, संदेह हुए। वह अपने अध्यापक जोन्स साहब के पास गया परंतु वह भी उसका संदेह निवारण न कर सके। रमण को पता चला तो उन्होंने उस समस्या का अध्ययन-मनन किया और इस संबंध में उस समय के प्रसिद्ध लॉर्ड रेले के निबंध पढ़े और उस समस्या का एक नया ही हल खोज निकाला। यह हल पहले हल से सरल और अच्छा था। लॉर्ड रेले को इस बात का पता चला तो उन्होंने रमण की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अध्यापक जोन्स भी प्रसन्न हुए और उन्होंने रमण से इस प्रयोग के संबंध में लेख लिखने को कहा। रमण ने लेख लिखकर श्री जोन्स को दिया, पर जोन्स उसे जल्दी लौटा न सके। कारण संभवत: यह था कि वह उसे पूरी तरह आत्मसात न कर सके।

प्रश्न:

१. किसने छात्रावस्था में ही विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का जमा लिया था?
२. रमण का एक साथी किस संबंध में प्रयोग कर रहा था?
३. अपने साथी की समस्या का हल निकालने के लिए रमण ने किसके निबंध पढ़े?
४. किसने रमण को लेख लिखने के लिए कहा?

बोर्ड कृतियाँ

१

दक्षिण और पश्चिमी भारत में स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा समाज सेवा की एक पुरानी परंपरा है। सादा जीवन, उच्च विचार और कठिन परिश्रम। इस परंपरा में अनेक स्वैच्छिक संस्थाएँ विकसित हुई हैं। उनमें से कुछ संस्थाएँ पर्यावरण की सुरक्षा में भी काम कर रही हैं। इन संस्थाओं को काफी पढ़े-लिखे लोगों, वैज्ञानिकों और शिक्षकों का सामयिक सहयोग मिलता रहता है। अभाग्यवश अनेक स्वैच्छिक संस्थाएँ दलगत राजनीति में अधिक विश्वास करती हैं और उनके आधार पर सरकारी सहायता लेने का प्रयास करती हैं। पर्वतीय क्षेत्र में सादगी की अभी यही व्यवस्था चलती है और इसलिए 'चिपको' आंदोलन बहुत हद तक सफल हुआ है। 'गाँधी शांति प्रतिष्ठान' तथा कुछ गांधीवादी संगठनों ने भी इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। सरला बहन ने अल्मोड़ा में इस काम की शुरुआत तब की थी जबकि पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता नहीं थी। श्री प्रेमभाई और डॉ. रागिनी प्रेम ने मिर्जापुर में पर्यावरण पर प्रशंसनीय काम किया है।

[मार्च २०१९]

प्रश्न:

१. किसके द्वारा समाजसेवा की परंपरा कायम है?
२. कुछ संस्थाएँ किसकी सुरक्षा में काम कर रही हैं?
३. कौन-सा आंदोलन सफल रहा?
४. डॉ. रागिनी ने कहाँ पर पर्यावरण में प्रशंसनीय काम किया?

२

स्वाधीन भारत में अभी तक अंग्रेजी हवाओं में कुछ लोग यह कहते मिलेंगे – जब तक विज्ञान और तकनीकी ग्रंथ हिंदी में न हो तब तक कैसे हिंदी में शिक्षा दी जाए। जब कि स्वामी श्रद्धानंद स्वाधीनता से भी चालीस साल पहले गुरुकुल काँगड़ी में हिंदी के माध्यम से विज्ञान जैसे गहन विषयों की शिक्षा दे रहे थे। ग्रंथ भी हिंदी में थे और पढ़ाने वाले भी हिंदी के थे। जहाँ चाह होती है वहीं राह निकलती है। एक लंबे अरसे तक अंग्रेज गुरुकुल काँगड़ी को भी राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग मानते रहे। इसमें कोई संदेह भी नहीं कि गुरुकुल के स्नातकों में स्वाधीनता की अजीब तड़प थी। स्वामी श्रद्धानंद जैसा राष्ट्रीय नेता जिस गुरुकुल का संस्थापक हो और हिंदी शिक्षा का माध्यम हो; वहीं राष्ट्रीयता नहीं पनपेगी तो कहाँ पनपेगी। स्वामी जी से मिलने देश के प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी गुरुकुल आते रहते थे।

[मार्च २०२०]

Sample Content

प्रश्न:

१. कौन हिंदी के माध्यम से विज्ञान जैसे गहन विषयों की शिक्षा दे रहे थे?

२. कहाँ राह निकलती है?

३. लंबे अरसे तक अंग्रेज किसे राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग मानते रहे?

४. स्वामी जी से मिलने देश के प्रमुख राष्ट्रीय नेता कहाँ आते रहते थे?

३

हर्ता मूलर को २००९ में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। उनका जन्म रोमानिया में हुआ। बचपन में उन्हें गाय चराने भेज दिया जाता, जहाँ उनके पास कोई खास काम नहीं होता। वह जिन फूलों को इकट्ठा करती, उन्हें कोई न कोई नाम देती, आकाश में धीमे-धीमे उड़ते बादलों की आकृति को किसी व्यक्ति का नाम देती और खुश होती। उन दिनों वह सोच भी नहीं सकती थी कि एक दिन उसे साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिलेगा। वह ज्यादा से ज्यादा अपनी चाची की तरह एक महिला दर्जी बनने के बारे में सोच सकती थी। उन दिनों वहाँ निकोलाई चाउसेस्की का तानाशाही शासन था और उसके परिवार पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी। शासन का एक भय लोगों में बना रहता था।

[दिसंबर २०२०]

प्रश्न:

१. हर्ता मूलर को साहित्य का नोबेल पुरस्कार कब मिला?

२. हर्ता मूलर का जन्म कहाँ हुआ?

३. हर्ता मूलर को बचपन में कहाँ भेज दिया जाता था?

४. हर्ता मूलर की चाची पेशे से क्या थीं?

४

सर सी. वी. वेंकटरमन भारत के उन महान वैज्ञानिकों में से हैं, जिन्हें उनकी 'रमन प्रभाव' की खोज के लिए जाना जाता है। भारत रत्न सी. वी. वेंकटरमन को १९३० में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

उनका जन्म ७ नंवबर, १८८८ की तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में हुआ। वे चंद्रशेखर अय्यर तथा पार्वती अमाल की दूसरी संतान थे। रमन के पिता गणित के प्रोफेसर थे। उनके पिता विशाखापट्टनम में ए. वी. एन. कॉलेज में नियुक्त हुए तो पूरा परिवार वहीं चला गया।

अल्पायु से ही रमन की शैक्षिक प्रतिभा सामने आने लगी। ग्यारह वर्षीय रमन ने ए. वी. एन. कॉलेज में दाखिला लिया। इसके दो वर्ष बाद ही वे मद्रास के प्रतिष्ठित प्रेसीडेंसी कॉलेज में पढ़ने गए। उन्होंने भौतिकी एवं अंग्रेजी में ऑनर्स के साथ बी. ए. की डिग्री हासिल की। उस समय एकेडमिक पढ़ाई में अच्छे छात्र उच्च शिक्षा पाने के लिए विदेश जाते थे। किंतु वे गिरती सेहत की वजह से नहीं जा पाए। अत: उसी कॉलेज में पढ़ते रहे और उन्होंने एम. ए. ऑनर्स की डिग्री ली।

[मार्च २०२२]

प्रश्न:

१. सर सी. वी. वेंकटरमन को उनकी किस खोज के लिए जाना जाता है?

२. सर सी. वी. वेंकटरमन को किस क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया?

३. सर सी. वी. वेंकटरमन का जन्म किस राज्य में हुआ था?

४. सर सी. वी. वेंकटरमन के पिता का क्या नाम था?

५

बसंत के आगमन के साथ ही कभी-कभी ऐसा लगता है, मानो जंगल में लाल रंग की लपटें उठ रही हों, ये लपटें आग नहीं बल्कि पलाश के नारंगीपन लिए लाल फूलों की होती हैं। पलाश के लाल-लाल फूल आग की लपटों के समान ही दिखाई देते हैं। इसीलिए इसे 'फ्लेम ऑफ द फायर' कहा जाता है।

पलाश भारतीय भूल का एक प्राचीन वृक्ष है। इसे आदिदेव ब्रह्मा और चंद्रदेव से संबंधित अलौकिक वृक्ष माना जाता है। इसमें एक ही स्थान पर तीन पत्ते होते हैं। इस पर कहावत प्रचलित है– 'ढाक के तीन पात'। इसकी लकड़ी का हवन में उपयोग किया जाता है। इसीलिए इसे याज्ञिक भी कहते हैं। यज्ञ में काम आने वाले पात्र भी पलाश की लकड़ी से बनाए जाते हैं।

[मार्च २०२३]

प्रश्न:

१. किसके लाल-लाल फूल आग की लपटों के समान दिखाई देते हैं?

२. पलाश किस मूल का एक प्राचीन वृक्ष है?

३. पलाश को किनसे संबंधित अलौकिक वृक्ष माना जाता है?

४. पलाश के पत्तों से संबंधित कौन-सी कहावत प्रचलित है?

Sample Content

AVAILABLE NOTES FOR STD. X:
(Eng., Mar. & Semi Eng. Medium)

PERFECT SERIES

- English Kumarbharati
- मराठी अक्षरभारती
- हिंदी लोकभारती
- हिंदी लोकवाणी
- आमोद: सम्पूर्ण-संस्कृतम्
- आनन्द: संयुक्त-संस्कृतम्
- History and Political Science
- Geography
- Mathematics (Part - I)
- Mathematics (Part - II)
- Science and Technology (Part - 1)
- Science and Technology (Part - 2)

PRECISE SERIES

- Science and Technology (Part - 1)
- Science and Technology (Part - 2)
- History, Political Science and Geography

PRECISE SERIES

- My English Coursebook
- मराठी कुमारभारती
- इतिहास व राज्यशास्त्र
- भूगोल
- गणित (भाग - I)
- गणित (भाग - II)
- विज्ञान आणि तंत्रज्ञान (भाग - १)
- विज्ञान आणि तंत्रज्ञान (भाग - २)

WORKBOOK

- English Kumarbharati
- मराठी अक्षरभारती
- हिंदी लोकभारती
- Mathematics (Part - I)
- Mathematics (Part - II)
- My English Coursebook
- मराठी कुमारभारती

Additional Titles: (Eng., Mar. & Semi Eng. Med.)

- Grammar & Writing Skills Books (Std. X)
  - Marathi • Hindi • English
- Hindi Grammar Worksheets
- 3 in 1 Writing Skills
  - English (HL) • Hindi (LL) • Marathi (LL)
- 3 in 1 Grammar (Language Study) & Vocabulary
  - English (HL) • Hindi (LL) • Marathi (LL)
- SSC 54 Question Papers & Activity Sheets With Solutions
- आमोद:(सम्पूर्ण-संस्कृतम्) – SSC 11 Activity Sheets With Solutions
- हिंदी लोकवाणी (संयुक्त), संस्कृत-आनन्द: (संयुक्तम्) – SSC 12 Activity Sheets With Solutions
- IQB (Important Question Bank)
- Mathematics Challenging Questions
- Geography Map & Graph Practice Book
- A Collection of Board Questions With Solutions

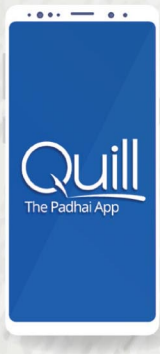

Scan the QR code to buy e-book version of Target's Notes on Quill - The Padhai App

Explore our range of STATIONERY

Visit Our Website

Target Publications® Pvt. Ltd.
Transforming lives through learning.

Address:
B2, 9th Floor, Ashar, Road No. 16/Z,
Wagle Industrial Estate, Thane (W)- 400604

Tel: 88799 39712 / 13 / 14 / 15
Website: www.targetpublications.org
Email: mail@targetpublications.org